ग्रोथ मंत्रा: ज्वेलरी व्यवसाय में फायदा अचूक मापने की चतु:सूत्री

लगभग 20-25 साल पहले की एक बात मुझे याद आ रही है। मैं एक ज्वेलर के पास गया था, तब उनके पिताजी के साथ प्रॉफिट, मार्जिन, प्रॉफिटॅबिलीटी ऐसे विषयों पर चर्चा शुरु थी। वे कह रहे थे, 'हमारी पद्धती कुछ ऐसी है की फायनान्शीअल इयर की शुरुआत में जो स्टॉक था और वर्ष के अंत में अगर वो स्टॉक बढ जाता है तो ऐसी वजन में हुई बढ़ोतरी हम प्रॉफिट के तौर पर कन्सीडर करते हैं!' देखा जाए तो ये तरीका कुछ साल पहले तक ठीक था। लेकिन समय के साथ ज्वेलरी इंडस्ट्री में कई बदलाव हुए हैं और हो भी रहे हैं। पहले के समय में, मेटल में होनेवाला प्रॉफिट अब कम होते जा रहा है, क्योंकि मेटल के रेट में ज्यादा से ज्यादा स्टैंडरडाइज़ेशन हो रहा है। लेकीन इसी बीच, लेबर में होनेवाला प्रॉफिट हालाँकि बढ़ रहा है। और साथ ही ज्वेलरी में भी अब एमआरपी/पर पीस किमत वाले, ज्यादा प्रॉफिट-मार्जिन होनेवाले आइटम बेचे जा रहे हैं, रखे जा रहे हैं। इसके अलावा, डायमंड्स और स्टोन्स में भी प्रॉफिटॅबिलिटी अधिक है। जिस वजह से अब डायमंड आयटम्स भी स्टॉक का हिस्सा बन चुके हैं। और इसी वजह से ही अब, वर्ष की शुरुआत में मेटल के वजन और वर्ष के अंत में मेटल के वजन के, बीच का अंतर याने प्रॉफिट यह विचार ही लुप्त हो चुका है! इसके अलावा एक और महत्वपूर्ण बात यह है कि अपने ज्वेलरी व्यवसाय में छोटे-छोटे, जटिल और पेचीदा लेन-देन यांनी व्यवहार होते रहते हैं। मेटल के रेट में भी लगातार उतार-चढ़ाव होते रहते है। इसलिए स्वाभाविक है के ज्वेलरी व्यवसाय की प्रॉफिटॅबिलिटी को अचूक मापना मुश्किल होता है। फिर इसके लिए क्या करना चाहिए? इसी बात पर ही अब हम चर्चा करनेवाले हैं। यानी निम्नलिखित नुसार ज्वेलरी व्यवसाय में फायदा अचूक मापने की चतु:सूत्री ध्यान में लेनेवाले हैं।

1. ट्रेडिंग अकाउंट में ग्रॉस प्रॉफिट पर नियमित नजर रखना: ट्रेडिंग अकाउंट में ग्रॉस प्रॉफिट आपको लगातार दिखाई देना चाहिए। ट्रेडिंग अकाउंट चाहे नेट वेट पर हो या फाईन वेट पर, उसे बिल्कूल सहज-सुचारु पद्धती से ही सेट करना चाहिए। ऐसा करने से आपको ट्रेडिंग अकाउंट में ही प्रॉफिट अँड लॉस लगातार पता चलता रहेगा। इसके साथ ही ट्रेडिंग अकाउंट में ग्रुपिंग भी अच्छे से सुस्पष्ट होना चाहिए। उदाहरणार्थ: जी. पी. परसेंटेज के अनुसार| जैसे स्टैंडर्ड बार या बुलियन का अलग ट्रेडिंग अकाउंट, ओल्ड गोल्ड का अलग ट्रेडिंग अकाउंट, 22 कैरेट के गेहनों का अलग ट्रेडिंग अकाउंट, 18 कैरेट का, डायमंड का अलग ट्रेडिंग अकाउंट आदि। इस वजह से हमें जिसकी-उसकी प्रॉफिटॅबिलिटी अच्छेसे समझ आती है। ग्रूपिंग के लिए वॅल्यूएशन पद्धती भी उचित तरिके से इस्तेमाल करनी होगी। जैसे वेटेड एव्हरेज, कॉस्ट ऑफ गुड्स सोल्ड, फर्स्ट इन फर्स्ट आऊट, ॲक्च्यूअल ऐसे चार विकल्पों में से किसी एक पर्याय को लेकर हम क्लोजिंग स्टॉक की वैल्यू तय कर सकते है। इसके अलावा, करंट रेट से क्लोजिंग स्टॉक की वैल्यू कितनी हो रही है? इस के बारे में भी हमें सोचना चाहिए.

2. कैश फ्लो रेग्युलरली चेक करते रेहना चाहिए: केवल जी.पी. या एन.पी. ही चेक ना कीजिए, बल्की अपने कैश फ्लो को भी चेक करते रहने की आदत डालना जरुरी है। हर एक ट्रांजेक्शन को कन्सिडर कर के हर महीने का कैश फ्लो हमें सॉफ्टवेयर में से जनरेट करना चाहिए और यह कैश फ्लो पिछले महीनों के साथ कम्पेअर भी करना चाहिए।

3. हर एक सेल्स बील पर होनेवाले प्रॉफिट की अचूक जांच करनी चाहिए: हर एक सेल्स बिल के पीछे होनेवाला प्रॉफिट कॅल्क्यूलेट करने के लिए, हर एक बारकोड के साथ परचेस कॉस्ट का रेकॉर्डिंग अवश्य रखें। लूज डायमंड्स और पैकेट में आने वाली अन्य वस्तुओं के लिए भी परचेस कॉस्ट का रिकॉर्ड बनाए रखना आवश्यक है। क्योंकि परचेस कॉस्ट जब सही होगी तभी तो हम हर एक बिल की प्रॉफिटॅबिलिटी सही सही निकाल सकते हैं।

4. प्रॉफिटॅबिलिटी के लिए इन्वेंटरी कैरिंग कॉस्ट ध्यान में लेनी चाहिए: ज्वेलरी व्यवसाय में वस्तुओं की किमत बहुत ज्यादा होती है इसलिए स्वाभाविक रुप से उनकी इंटरेस्ट कॉस्ट, अपॉर्चुनिटी कॉस्ट, सेक्युरिटी कॉस्ट, ट्रान्सपोर्टेशन कॉस्ट भी बहुत ज्यादा होती है। यही कारण है कि ज्वेलरी की, ज्वेलरी आयटम्स की इन्वेंटरी कैरिंग कॉस्ट अधिक होती है। और इसलिए अचूक प्रॉफिटॅबिलिटी के लिए इन्वेंटरी कैरिंग कॉस्ट पर ध्यान देना जरुरी होता है।

कुल मिलाकर बात यह है की इन सभी चीजों को हमें प्रॉफिटॅबिलिटी के लिए कन्सिडर करना होगा। और ऐसी छोटी, छोटी चीजों पर ध्यान देते हुए अचूक फायदा कमाने के लिए टुल्स का, टेक्नॉलॉजी का उपयोग करना उतना ही महत्वपूर्ण साबीत होता है।

'ज्वेलरी व्यवसाय में फायदा अचूक मापने की चतु:सूत्री' के Do's and Don'ts
1. ट्रेडिंग अकाउंट बनाते समय रिफाइनिंग के गेन और लॉस का हिसाब तथा वर्क इन प्रोग्रेस इन्वेंटरी को जरुर ध्यान में लें। जिससे, ट्रेडिंग अकाउंट अधिक उचित तरीके से मेंटेन होता है।
2. लूज़ डायमंड, MRP आइटम के लिए क्लोजिंग स्टॉक वैल्यूएशन का तरीका ॲट एक्चुअल यानी At cost रखें। वह अधिक संयुक्तिक साबित होता है।
3. ट्रेडिंग अकाउंट में, इस्तमाल किए हुए अलोय का हिसाब उचित तरीके से रखें।
4. अलग-अलग कैरेट के अलग-अलग ट्रेडिंग अकाउंट मेंटेन करें। जैसे 22K गेहेनों का ट्रेडिंग अकाउंट, 18K गेहेनों का ट्रेडिंग अकाउंट आदि। इसके अलावा गोल्डस्मिथ रिसीट को गोल्डस्मिथ इशू का रेफरन्स देने की सॉफ्टवेयर में दी गई पद्धती का अवलंब जरुर करें। ऐसा करने से ट्रेडिंग अकाउंट का वैल्यूएशन सही होता है।
5. कैश फ्लो स्टेटमेंट तैयार करते समय सेविंग स्कीम जैसे ट्रांजेक्शन को ध्यान में रखें क्योंकि इसमें हम ग्राहक से एडवांस के तौर पर पैसे लेते हैं।
6. जो गिफ्ट वाउचर एक्सपायर होते है उन्हे कैश फ्लो में कंसिडर करें। क्योंकि उनका असर लायबिलिटी साईड से इन्कम साईड में जाते रहता है।
7. गेहना आने से लेकर वो बेचा जाने तक एक श्रृंखला पद्धती बनाकर उस प्रकार से वर्क फ्लो तैयार करें। इसमें परचेस कॉस्ट ऑटोमेटिक कॉपी करें। इस तरह का वर्क फ़्लो बनाने के कई फ़ायदे होते हैं।
8. परचेस कॉस्ट को ठीक से मेंटेन रखने के लिए आयटम्स लूज ना रखें बल्की उन के पैकेट्स, लॉट्स तैयार करें या उन का बारकोडिंग करें।
9. इन्वेंटरी टर्न यानी सेल्स व्हर्सेस क्लोजिंग स्टॉक के रिपोर्ट को लगातार रीव्ह्यूव करें।
10. डेड स्टॉक, स्लो मुविंग आयटम पर भी लगातार निगरानी रखें।

तो याद रखें "ज्वेलरी व्यवसाय में फायदा अचूक मापने की चतु:सूत्री, यानी छोटे छोटे नुकसान से बचने की गारंटी!"